संवाद

'शिक्षा' प्रत्येक बच्चे का अधिकार है। जब व्यवस्था प्रत्येक बच्चे तक शिक्षा पहुँचाने का प्रयास करती है तो गुणवत्ता का मुद्दा नयी तरह की चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है। इन चुनौतियों का सामना करना और उनका समाधान करना सभी की ज़िम्मेदारी है।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए यह ज़रूरी है कि समाज के विभिन्न वर्गों व क्षेत्रों में रहने वाले सभी बच्चों के समाज-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य को ठीक-ठाक समझ लिया जाए। साथ ही यह समझना भी ज़रूरी है कि शिक्षा की गुणवत्ता है क्या?

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा जीवन को बेहतर तरीके से जीने के बेहद करीब है। शिक्षा ऐसी हो जो बच्चों में विवेक, तर्क, चिंतन आदि गुणों का विकास कर सके।

योग्य व उत्साही शिक्षकों की उपलब्धता, इस गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को बनाए रखने के लिए बहुत ज़रूरी है। हाल के वर्षों में कक्षा एक और दो में वातावरण और कक्षायी प्रक्रियाओं को सुधारने के काफ़ी प्रयास हुए हैं। इन प्रयासों के अंतर्गत बच्चों के लिए विविध प्रकार की रोचक सामग्री का निर्माण एवं प्रकाशन भी किया जा रहा है। 'गतिविधि' शब्द आजकल अधिकतर प्राथमिक स्कूलों में बहुत प्रचलित है, गतिविधियाँ शिक्षक को मौका देती हैं कि वे इनके माध्यम से हर बच्चे पर ध्यान दे सकते हैं और सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान बच्चे की ज़रूरत और रुचि के अनुसार बदलाव ला सकते हैं। 'गतिविधियाँ' कक्षा में चल रहे कार्यों को बहुत रोचक बना देती हैं।

कक्षा 1 से 8 तक की प्रारंभिक शिक्षा को आजकल अनिवार्य शिक्षा की अवधि के रूप में स्वीकार किया गया है। आठ सालों की यह अवधि वह समय है जब बच्चों का महत्वपूर्ण संज्ञानात्मक विकास होता है और विवेक को आकार मिलता है। सामाजिक कौशलों, वृद्धि एवं काम के लिए ज़रूरी कौशलों और अभिवृत्तियों का भी विकास होता है, जैसे – जैसे शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने के प्रयास तेज़ हो रहे हैं, वैसे-वैसे प्रारंभिक विद्यालयों की ज़िम्मेदारी भी बढ़ रही है।

अत: यह ज़रूरी है कि प्रारंभिक शिक्षा विविधता और लचीलापन लिए हुए हो, खेल और गतिविधि-आधारित हो, जो बच्चों को भाषा और अभिव्यक्ति में सक्षम बनाएँ तथा उनमें आत्मविश्वास जगाएँ। प्रारंभिक शिक्षा से जुड़े इन्हीं सरोकरों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत है यह अंक। आशा है कि आपको यह अंक पसंद आएगा। आपकी प्रतिक्रियाओं और सुझावों की हमें प्रतीक्षा रहेगी। इस अंक से पाठकों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, बच्चों के मन, उनके व्यवहार को समझने में मदद मिलेगी।

अकादमिक संपादक

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा — 2005 के मुख्य मार्गदर्शक सिद्धांत

- *ज्ञान को स्कूल के बाहरी जीवन से जोड़ना,*
- *पढ़ाई रटंत प्रणाली से मुक्त हो, यह सुनिश्चित करना,*
- *पाठ्यचर्या का इस तरह संवर्धन हो कि वह बच्चों को चहुँमुखी विकास के अवसर मुहैया करवाए बजाय इसके कि वह पाठ्यपुस्तक-केंद्रित बन कर रह जाए,*
- *परीक्षा को अपेक्षाकृत अधिक लचीला बनाना और कक्षा की गतिविधियों से जोड़ना, और*
- *एक ऐसी अधिभावी पहचान का विकास जिसमें प्रजातांत्रिक राज्य-व्यवस्था के अंतर्गत राष्ट्रीय चिंताएँ समाहित हों।*